Roll No.: .....

Total No. of Questions : 5] [Total No. of Printed Pages : 1

W-3414

M.A.(Fourth Semester) Examination, June-2020

HINDI (OPTIONAL PAPER)

Paper - 404

Jayshankar Prasad

Time : Three Hours

Maximum Marks : 85 (For Regular Students) ***Maximum Marks : 100 (For Private Students)***

Minimum Pass Marks : 29 ***Minimum Pass Marks : 34***

Note : Attempt **all** questions.

नोट : **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

Q.1. निम्नाङ्कित गद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए।

क) पिता का पता नहीं, झोपड़ी भी न रह गयी। सुवासिनी अभिनेत्री होगयी। संभवतः पेट की ज्वाला से एक साथ दो दो कुवुम्बों का सर्वनाश और कुसुमपुर फूलों की सेज में ऊँघ रहा है। क्या इसीलिए राष्ट्र की शीतल छाया का संगठन मनुष्य ने किया था? मगध! मगध! साबधान! इतना अत्याचार ! सहना असम्भव हैं। तुझे उलत दूँगा। नया बनाऊँगा, नहीं तो नाश ही करूँगा।

ख) कविता करना अनन्त पुण्य का फल है। इस दुराशा और अनन्त उत्कण्ठा से कवि–जीवन व्यतीत करने की इच्छा हुई। संसार के समस्त अभावों को असंतोष कहकर हृदय को धोखा देता रहा। परन्तु कैसी विडम्बना। लक्ष्मी के लालों का भ्रमंग और क्षोभ की ज्वाला के अतिरिक्त मिला क्या? एक काल्पनिक प्रशंसनीय जीवन, जो कि दूसरों की दया में अपना अस्तित्व रखता है। सञ्चित हृदय कोश अमूल्य रत्नों की उदारता और दारिद्रय का व्यंग्यात्मक अट्टहास दोनों की विषमता की कौन सी व्यवस्था होगी। मनोरथ को –मारत के प्रकाण्ड बोंद्ध पण्डित को परास्त करने में मैं सबकी प्रशंसाका मात्रन बनी परन्तु हुआ क्या?

ग) राजन् शुद्ध बुद्धि तो सदैव निर्लिप्त रहती है। केवल साक्षी रूप से सब दृश्य देखती है। तब भी, इन सांसारिक झगड़ों में उसका उद्धेश्य होता है कि न्याय का पक्ष विजयी हो–यही न्याय का समर्थन है। तटस्थ की यही शुभेच्छा सत्व से प्रेरित होकर समस्त सदाचारों की नींव विश्व में स्थापित करती है। यदि वह ऐसान करे, तो अप्रत्यक्ष रूप से अन्याय का समर्थन हो जाता है। हम विरक्तों को भी इसीलिए राज दर्शन की आवश्यकता हो जाती है।

घ) कामना एक सुन्दर रानी होने के योग्य प्रभावशालिनी स्त्री है। उसने ब्याह का प्रस्ताव किया था। मैं भी ब्याह के पवित्र बंधन में बँध कर राजा होकर सुखी होता, परन्तु मेरी मानसिक–अव्यवस्था कैसे छाया–चित्र दिखलाती है। कोई अदृष्ट शक्ति संकेत कर रही हैं। –नहीं कामना एक गर्व–पूर्ण और सरल हृदय की स्त्री है। रंगीनतो है, पर निरीह इंद्र धनुष के समान उदय होकर विलीन होने वाली है। तेज तो है, पर वेदी की धघकाने से जलने वाली ज्वाला है। मैं उसको अपना हृदय–समर्पण नहीं कर सकता। मुझको चाहिये बिजली के समान वक्र रेखाओं का सृचन करने वाली, आँखों को चौंजिया देने वाली तीव्र और विचित्र वर्णमाला, जिस हृदय में ज्वालामुखी धघकती हो, जिसे ईंधन का काम न हो, वह दुर्दमनीय तेज–ज्वाला मैं उसी का अनुगत हूँगा। यह उसीका लोहा मानेगा। इसं फूलों के द्वीप में मधुप के समान विहार करूँगा। मैं इस देशके अनिर्दिष्ट पथ का घूमकेतु हूँ।

Q.2. हिन्दी नाटक के उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डालिए।

Q.3. प्रसाद के नाटकों में इतिहास और कल्पना का सुन्दर सनन्वय है। इस कथन के आधार पर चन्द्रगुप्त नाटक की समीक्षा कीजिए।

Q.4. नाट्यकला के तत्वों के आधार पर 'अजातशत्रु' की समीक्षा कीजिए।

Q.5. निम्नलिखित प्रश्नों को लघुउत्तरीय में उत्तर दीजिए।

क) मोहन राकेश का नाट्यशिल्प 'आधे अधूरे' नाटक के सन्दर्भ में ।

ख) सुरेन्द्रवर्मा के नाटकों की अभिनेयता